P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-8* (Part-2) April- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

चित्रकूट : एक तीर्थ

सारांश

चित्रकूट का प्रथम साहित्यिक उल्लेख वाल्मीकि रामायण (I.2.54.28) में मिलता है। तत्पश्चात् महाभारत (III,83.55-61), मत्स्य पुराण (20.65), नारद पुराण (I.79.18), अग्नि पुराण (6.35-36) और पद्म पुराण (III.39.55-61) में चित्रकूट का सन्दर्भ मिलता है। जैनग्रंथ भगवती टीका और कालिदास के रघुवंश महाकाव्य (XII.9.15) में भी चित्रकूट का उल्लेख प्राप्त होता है। पुरातात्विक साक्ष्यों में सर्वप्रथम चित्रकूट का सन्दर्भ गढ़वा लेख (इलाहाबाद) में मिलता है। विदेशी विवरणों में सर्वप्रथम ह्वेनसांग, चित्रकूट का उल्लेख करता है।

मुख्य शब्द : चित्रकूट, तीर्थ, कामदगिरि, आश्रम, महापुरूष।

महेन्द्र कुमार उपाध्याय
एसोसिएट प्रोफेसर एवं
विभागाध्यक्ष,
इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व
विभाग,
ज0रा0वि0विश्वविद्यालय,
चित्रकूट (उ0प्र0) भारत

प्रस्तावना

सन् 1700 में पन्ना राज्य के महाराज संभा सिंह तथा उनके उत्तराधिकारी महाराज अमान सिंह ने चित्रकूट तीर्थ का, मन्दाकिनी के घाटों और मंदिरों का निर्माण करवाकर जीर्णोद्धार करवाया था, क्योंकि यह पवित्र तीर्थ क्षेत्र पन्ना रियासत का अंग था। इसके पश्चात् धीरे–धीरे कई राजाओं ने इस तीर्थ क्षेत्र में मंदिरों का निर्माण करवाकर इस पुण्य कार्य में योगदान दिया।

अध्ययन का उद्देश्य

भारतीय उपमहाद्वीप के तीर्थों में चित्रकूट का विशिष्ट स्थान है। त्रेतायुग में अयोध्या से निष्कासित होने पर श्रीराम अपने वनवास काल का 11½ वर्ष यहीं व्यतीत किये थे। महर्षि वाल्मीकि, अनुसूइया–अत्रि, सुतीक्ष्ण, सरभंग और गोस्वामी तुलसीदास जैसे ऋषि–मुनियों की साधना एवं जन्मस्थली होने का श्रेय इस स्थान को प्राप्त है। एतदर्थ चित्रकूट तीर्थ का अध्ययन ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिक है।

तीर्थ, संस्कृत भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ है पाप से तारने, पार उतारने वाला। सभी धर्मों में पाप–पुण्य की भावना है। तीर्थ का अभिप्राय है जो अपने में पुनीत हो और अपने यहाँ आने वालों में भी पवित्रता का संचार कर सके। हिन्दू धर्म के तीर्थ प्रायः देवताओं के निवास स्थान होते हैं। दूसरे शब्दों में, जहाँ ऋषि–मुनियों ने साधना की व मुक्त हुए, वहीं तीर्थ बन गया। जहाँ अवतारी पुरुषों ने जन्म लिया तथा जहाँ–जहाँ उनके पद चिन्ह पड़े थे वे सभी तीर्थ बन गए। महापुरुष स्वयं परम तीर्थ हैं उनसे ही ये तीर्थ पवित्र हुए हैं।

तीर्थ की उपर्युक्त परिभाषा के अनुसार चित्रकूट एक तीर्थ है, क्योंकि यहाँ महर्षि वाल्मीकि, अनुसूइया–अत्रि, शरभंग, सुतीक्ष्ण और गोस्वामी तुलसीदास जैसे ऋषियों–मुनियों की साधना एवं जन्मस्थली है। भगवान विष्णु के अवतार कहे जाने वाले श्रीराम अपने वनवास काल में लगभग 11½ वर्ष यहीं (कामदगिरि) पर व्यतीत किये थे। यहीं कोटितीर्थ नामक एक स्थल है। महाकाव्यों एवं अन्य अनेक ग्रन्थों में वर्णित चित्रकूट की जीवनाधार एवं पुण्यसलिला मन्दाकिनी के तट पर स्थिति रामघाट सभी घाटों में प्रमुख है। सम्प्रति, नानाजी देशमुख एवं श्री रामभद्राचार्य जैसे महापुरुषों की कर्मस्थली चित्रकूट ही है। इस प्रकार चित्रकूट एक तीर्थ है।

प्राकृतिक सौन्दर्य से सम्पन्न $24^0$24′–$25^0$12′ उ0 अक्षांस तथा $80^0$58′–$81^0$34′ पू0 देशान्तर के मध्य अवस्थित चित्रकूट भारत वर्ष का एकमात्र तीर्थ है, जिसका भौगोलिक विन्यास दो प्रदेशों में फैला हुआ है। पैतृक जनपद बांदा की कर्वी एवं मऊ तहसीलों के क्षेत्रों को समाविष्ट करके मई, 1997 में जनपद छत्रपति शाहूजी महाराज नगर का सृजन किया गया। कालान्तर में जनभावनाओं का सम्मान करते हुए 8 सितम्बर 1998 को जनपद का नामकरण चित्रकूटधाम कर दिया गया।

चित्रकूट, 15 वर्ग किमी में विस्तृत अनेक सुरम्य दर्शनीय पौराणिक पुण्यस्थलों से युक्त एक क्षेत्र है। एक तिहाई चित्रकूट उत्तर प्रदेश में आता है तथा दो तिहाई मध्यप्रदेश के अन्तर्गत आता है। यह उत्तर में कौशाम्बी, दक्षिण में

म0प्र0 के सतना और रीवा जिले, पूर्व में प्रयागराज और पश्चिम में बांदा जनपदों से घिरा है।

चित्रकूट तीर्थ का एक स्थल लालापुर स्थित महर्षि वाल्मीकि आश्रम है। यह आश्रम, बांदा–प्रयागराज राष्ट्रीय राजमार्ग पर कर्वी से 16 किमी तथा चित्रकूट से 30 किमी दूर पूर्व दिशा में स्थित है। पहाड़ी के शिखर पर एक छोटा सा मन्दिर है, जिसमें महर्षि वाल्मीकि की प्रतिमा स्थापित है। इसके दक्षिण–पूर्व पार्श्व भाग में एक गुफा है जिसमें अनेक प्रकार की प्राचीन मूर्तियां स्थापित हैं। इसी स्थान पर महर्षि वाल्मीकि ने वनवासी राम को चित्रकूट में वास करने का परामर्श दिया था।[1] पहाड़ी के शिखर के नीचे तल से कुछ ऊपर आसावरी देवी का मन्दिर स्थित है, जिसके गर्भगृह में एक अष्टभुजी महिषासुर मर्दिनी की प्रस्तर प्रतिमा स्थापित है जो चन्देलकालीन है। यह मन्दिर पहाड़ी के ढाल पर 5 मीटर ऊँचे वर्गाकार (10X10 मी0) पक्के चबूतरे पर बनाया गया है। इसमें 2मी0 ऊँचा प्रवेश द्वार है। वर्तमान में यहाँ महर्षि वाल्मीकि की स्मृति में संस्कृत पाठशाला चल रही है। इसी में रामायण महोत्सव का आयोजन प्रतिवर्ष किया जाता है। माघ मास के चारो सोमवार तथा चैत्र मास की नवरात्रि को विशाल मेला लगता है। पहाड़ी के नीचे वाल्मीकि या ओहन नदी प्रवाहित होती है। वाल्मीकि आश्रम प्राचीन काल से ही शिक्षा का केन्द्र रहा है।

अनुसूइया–अत्रि आश्रम

यह आश्रम म0प्र0 में कामदगिरि से 16 किमी दक्षिण दिशा में मन्दाकिनी के बायें तट पर स्थित है। पुण्यसलिला मन्दाकिनी को अत्रि पत्नी अनुसूइया अपने तपोबल से पृथ्वी पर लायी थीं। एक बार दस वर्षों तक वर्षा न होने से भयंकर अकाल पड़ा। अकाल से आक्रान्त पशु–पक्षियों तथा वनस्पतियों को त्राण दिलाने हेतु अनुसूइया ने कठिन तपस्या की तथा अपने तप से मन्दाकिनी को पृथ्वी पर अवतरित किया।[2] पुराणों के अनुसार विष्णु, शिव तथा ब्रह्मा के अंश दत्तात्रेय, दुर्वासा तथा चन्द्र, अत्रि तथा अनुसूइया के पुत्र के रूप में इसी आश्रम में उत्पन्न हुए थे।[3] भगवान श्रीराम शरभंग आश्रम जाते हुए इसी आश्रम में रुके थे।[4] यहीं सती अनुसूइया ने सीता को पतिव्रत धर्म की शिक्षा दी थी।[5] वृहद् चित्रकूट माहात्म्य में वर्णित है कि अत्रि–अनुसूइया आश्रम मंदार गिरि के मध्य स्थित है।[6]

सरभंगाश्रम

यह आश्रम सती अनुसूइया आश्रम से 20 किमी दक्षिण–पूर्व में स्थित है। यहां पर एक गंगा कुण्ड व शिव मन्दिर है। आश्रम के पार्श्व में पर्वत के नीचे यज्ञ की 108 वेदिकाएं हैं। श्रीराम ने वनवास काल में सरभंग ऋषि को यहीं पर दर्शन दिये थे। इस आश्रम के गंगाकुण्ड में स्नान का विशेष महत्व है। अनुश्रुति है कि ''बार–बार गंगा, एक बार सरभंगा''।[7]

सुतीक्ष्ण आश्रम

यह आश्रम सरभंग आश्रम से 4 किमी उत्तर और चित्रकूट से 45 किमी पूर्व दिशा में धारकुण्डी नामक स्थान पर है। यहां पर राम ने महर्षि सुतीक्ष्ण को दर्शन देकर उनकी अभिलाषा पूरी की थी। यहां पर पर्वतों के बीच से एक सुन्दर झरना बहता है जो एक कुण्ड में गिरता है, शायद इसी कारण इस स्थान का नाम धारकुण्डी पड़ा।[8]

राजापुर

महाकवि गोस्वामी तुलसीदास जी की जन्मस्थली राजापुर कर्वी से 34 किमी0 की दूरी पर स्थित है। यमुना नदी के तट पर गोस्वामी तुलसीदास जी तथा संकटमोचन हनुमान जी का सुन्दर मन्दिर स्थित है। तुलसीदास जी के मन्दिर के पास एक भवन में रामचरित मानस के कुछ भाग की दुर्लभ हस्तलिखित प्रति सुरक्षित हैं। इसे तुलसीदास जी द्वारा लिखित बताया जाता है। यहां पर संत कवि तुलसीदास जी की स्मृति में तुलसी स्मारक निर्मित है।[9]

कोटितीर्थ

चित्रकूट से 7.5 किमी पूर्व में संकर्षण पर्वत माला के पार्श्व में स्थित एक सुरम्य उपतीर्थ कोटितीर्थ है। इस स्थान पर अनेक ऋषि–मुनियों ने तपस्या द्वारा सिद्धि प्राप्त की थी। यह करोड़ों ऋषियों का तप स्थान होने के कारण कोटितीर्थ नाम से विख्यात है। वृहद चित्रकूट माहात्म्य के अनुसार इस स्थान पर कोटि संख्यक ऋषि–मुनि हर्ष पूर्वक श्रीराम के प्रथम दर्शन की आकांक्षा से तपस्या में रत थे।[10] महाभारत तथा पद्मपुराण के अनुसार कोटितीर्थ में स्नान करने से सहस्र गोदान का फल प्राप्त होता है।[11] किंवदन्ती के अनुसार श्रीराम के चित्रकूट प्रवास काल में उनके दर्शन हेतु आये करोड़ों देवगण इसी स्थान पर ठहरे थे। अतः इसे कोटितीर्थ कहते हैं। वृहद् चित्रकूट माहात्म्य के अनुसार इस स्थान पर अग्नितीर्थ, सोमतीर्थ, सूर्यतीर्थ आदि स्थित हैं।[12]

कामदगिरि

भगवान राम अपने वनवासकाल में चित्रकूट आगमन पर जिस पर्वत पर सपत्नी निवास किये वह चित्रकूट गिरि (कालान्तर में कामदगिरि) नाम से विख्यात है। इस पर्वत के दर्शन मात्र से व्यक्ति का कल्याण हो जाता है तथा वह मोक्ष प्राप्त कर लेता है।[13]

यह रामघाट से 3 किमी पश्चिम में स्थित है। उक्त के परिक्रमा मार्ग की कुल लम्बाई लगभग 5 किमी है। परिक्रमा मार्ग के दोनों ओर स्थान–स्थान पर मन्दिर एवं दर्शनीय स्थल है। यह उ0प्र0 एवं म0प्र0 दोनों प्रदेशों से होकर गुजरता है। सन् 1725 में राजा छत्रसाल की रानी चाँद कुँवर ने इस पर्वत के आधार के चारों ओर एक पथरीला पैदल मार्ग बनवाया था। श्रद्धालु इस पर्वत की पैदल तथा साष्टांग दण्डवत प्रदक्षिणा करते हैं। ऐसा मानना है कि प्रदक्षिणा का आरम्भ रामायण काल में हुआ था तथा सर्वप्रथम भरत ने राम की पादुका लेकर अयोध्या लौटने से पूर्व इस पर्वत की प्रदक्षिणा की थी।[14] राम की कृपा से चित्रकूट गिरि कामनाओं को पूर्ण करने वाला हो गया, जो दर्शन मात्र से ही भक्तों के कष्ट को दूर कर देता है।[15] यह पर्वत श्रीराम से सम्बन्धित होने के कारण ही पवित्र नहीं माना जाता बल्कि धनुषाकार होने के कारण इसे श्रीराम के धनुष का प्रतीक मानते हैं।

रामघाट

रामघाट कर्वी मुख्यालय से लगभग 6किमी दूर पश्चिम दिशा में अवस्थित है। चित्रकूट में पवित्र पयस्विनी नदी के बीच वाले घाट को रामघाट कहते हैं। विश्वास किया जाता है कि चित्रकूट आगमन पर भगवान श्रीराम

अपनी पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण के साथ यहां स्नान किये थे। इसी स्थान पर गोस्वामी तुलसीदास जी को राम–लक्ष्मण के दर्शन हुए थे।[16] रामघाट के ऊपर का मन्दिर यज्ञवेदी के नाम से विख्यात है।

इसके अतिरिक्त नाना जी देशमुख और रामभद्राचार्य जैसे महापुरुषों की कर्मस्थली चित्रकूट रहा है। इनके द्वारा स्थापित ग्रामोदय विश्वविद्यालय और दिव्यांग विश्वविद्यालय यहां उच्च शिक्षा की ज्योति जला रहे हैं।

निष्कर्ष

इस प्रकार, उपर्युक्त तथ्यों के आलोक में चित्रकूट को तीर्थ स्वीकार करना उचित ही है। चित्रकूट सदा से धार्मिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक शिक्षण –प्रशिक्षण केन्द्र के रूप में विश्व मानचित्र पर चित्रित है। यहां आने वाले तीर्थयात्रियों को यह पावन एवं पौराणिक स्थल असाधारण अध्यात्म भाव, ज्ञान, वैराग्य और भक्ति की असाधारण ऊर्जा प्रदान करता है।

अंत टिप्पणी

1. *रामायण, 2.56.16.*
2. *वही, 2.107.9–11., वृहद् चित्रकूट माहात्म्य, 7.54.*
3. *श्रीमद् भागवतपुराण, 9,1.15, वृहद् चित्रकूट माहात्म्य, 7.44*
4. *अग्निपुराण, 7.10*
5. *रामायण, 2.117.29*
6. *वृहद चित्रकूट माहात्मय, 7.54.*
7. *चित्रकूट सूचना कोष, चित्रकूट, 2006–07, पृ0–18*
8. *वही,*
9. *वही, पृ0–16*
10. *वृहद् चित्रकूट माहात्म्य, 12.8–9*
11. *महाभारत, 3.83.58*
12. *वृहद् चित्रकूट माहात्म्य, 12.16*
13. *रामायण, 2.54.27*
14. *वही, 2.105.3*
15. *रामचरितमानस, II.279.1*
16. *चित्रकूट सूचना कोष (2006–07), पृ0–13*